गुरुमाई चिद्विलासानन्द के दर्शन एवं उनका प्रज्ञान

१. दर्शन हृदय में होते हैं। यह हृदय में होने वाली शक्ति की गतिशीलता है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२. सच्चे साधकों में यह ललक होती है कि वे जिनसे भी मिलें, उन सभी में भगवान के मुखमण्डल के दर्शन करें, वे जहाँ भी जाएँ, वहाँ भगवान की उपस्थिति को महसूस करें, कि वे सभी दिशाओं में दिव्य प्रकाश को जगमगाता देखें, कि वे ब्रह्माण्ड के कण-कण के साथ एकत्व का अनुभव करें।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

३. सिद्धयोग पथ का परम उद्देश्य है, अपनी अन्तरात्मा को जानना, स्वयं अपने दिव्य सत्त्व का सम्मान करना और उसे पूजना। जब तुम इस परम उद्देश्य का अनुशीलन करते हो तो यह तुम्हें तुम्हारे अपने दिव्य सत्त्व के स्वरूप तक ले जाता है — जो है परम आनन्द।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

४. कल्पना करो कि शुष्क धरती पर बारिश की बूँदें गिर रही हैं। क्या तुम देख सकते हो कि भूमि कैसे नरम और फलप्रद हो जाती है? इसी तरह, भक्ति की बूँदें हृदय की सर्वोत्कृष्टता को प्रकट करती हैं।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

५. उत्कृष्ट सद्गुण सतत एक रमणीय निवास की खोज में रहते हैं। तुम्हें योग्य पाकर, वे आकर तुम्हारे अन्दर बस जाते हैं।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

६. कृपा की उपस्थिति में समय थम जाता है। अज्ञान का परदा हट जाता है; प्रकाश उमड़ आता है। तुम्हारी सम्पूर्ण सत्ता देदीप्यमान हो जाती है; अन्तर-नाद सुनाई पड़ने लगता है। जीवात्मा परमात्मा के साथ एकाकार हो जाती है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

७. जब तुम्हारा हृदय खुला होता है, जब तुम अपने हृदय में होते हो, तब तुम सूर्योदय को, वृक्षों को, पर्वतों को जिस तरह देखते हो, वह विलक्षण होता है, वह अनुपम होता है। बार-बार, अपने अवधान को अपने हृदय की भव्यता पर लाओ।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

८. नामसंकीर्तन और ध्यान करते-करते, तुम उस महानता को देखने लगते हो जो तुम्हारे अन्दर विद्यमान है; तुम्हें अपने अन्दर एक सम्पूर्ण नए लोक की झलक मिलने लगती है। अपने अन्तर-जगत तक जाने वाले जिस पुल का तुम निर्माण कर रहे हो, जब वह सशक्त होता जाता है और दूर तक पहुँचता है, तब तुम्हें परम आत्मा की महिमा की अनुभूति होने लगती है; तुम्हें दिव्य प्रकाश के, तेजोमय परमेश्वर के दर्शन होने लगते हैं। तब तुम्हें एक मनुष्य की सच्ची योग्यता का पता चलता है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

९. भगवान का स्तुतिगान करना, एक स्थान को दूसरे स्थान से, एक हृदय को दूसरे हृदय से जोड़ता है। यह तुम्हें प्रफुल्लित कर देता है। तुम्हें एक नया उत्साह मिल जाता है। सिद्धयोग पथ पर, इस आनन्दपूर्ण ध्वनि को नामसंकीर्तन कहते हैं।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१०. सर्वोच्च का अनुभव करने के लिए, परमात्मा का अनुभव करने के लिए, तुम्हें स्वप्रयत्न करना ही होगा। इस प्रकार, जब तुम्हें गुरुकृपा प्राप्त होगी तो वह सदैव तुम्हारे साथ रहेगी।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

११. जब तुम प्रार्थना करते हो, तब तुम उस वायुमण्डल में प्रवेश करते हो जो भगवान के अन्तर में है; तुम वास्तव में उनकी सत्ता में प्रवेश करते हो। प्रार्थना भगवान से बात करने का साधन है। प्रार्थना आश्वासन देती है। प्रार्थना वह चुम्बक है जो भगवान की उपस्थिति को आकर्षित करती है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१२. सेवा परमोधर्मः, "निःस्वार्थ सेवा परम धर्म है।" सेवा में हृदय भगवान के आदेश का पालन करने के लिए ललक उठता है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१३. तुम्हें अपने अन्दर के गहन मौन को चखना ही चाहिए। जब तुम पूरी तरह स्थिर हो जाते हो तो तुम उन वस्तुओं को देख पाते हो जो वैभवशाली हैं, पर अक्सर नज़रअन्दाज़ कर दी जाती हैं, जैसे कमल की पत्ती पर पड़ी पानी की बूँद में तारे की छवि। उस पूर्ण स्थिरता को सिद्धयोग ध्यान कहते हैं।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१४. रेगिस्तान की मन्द-मन्द हवा
ये शब्द गुनगुनाती है —
शिवदृष्टि
ॐ नमः शिवाय

शिवभाव
शिवोऽहम्
शिवदर्शन
यह सब शिव है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१५. जब तुम ध्यान द्वारा बारम्बार अन्तर्मुखी होते जाते हो, तब तुम अपनी सत्ता के उस भाग का अनुभव करने लगते हो जो पूर्णतः जाग्रत है। यह जाग्रतावस्था सदैव विद्यमान, सदैव प्रशान्त, सदैव जगमग, सदैव देदीप्यमान, सदैव प्रवाहित होने वाली शक्ति है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१६. आदि में, प्रेम। अन्त में, प्रेम। मध्य में, हमें सद्‌गुणों का विकास करना है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१७. सिद्धयोग का दर्शन यह है : हम जिस व्यक्ति और जिस वस्तु को देखते हैं, उसमें झिलमिलाते नील प्रकाश का अनुभव करना; दूसरों की आवश्यकताओं को समझना; हर समय हृदय की मृदुल, प्रेमपूर्ण और निश्चिन्त धड़कन को महसूस करना; हलके क़दमों से चलना और मीठा बोलना; निर्बाध रूप से भगवान की महिमा गाना; सभी प्राणियों को भगवान के एक बृहत् कुटुम्ब के रूप में देखना; हर वस्तु में और हर किसी में परम आत्मा को पहचानना। इसे ही अपना लक्ष्य बना लो। इसे ही अपना संकल्प बना लो। इसे ही अपना पथ बना लो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१८. ओऽम् अस्त होता हुआ सूर्य बन जाता है,
ओऽम् रात्रि के आकाश के लिए कम्बल बन जाता है,
ओऽम् सुस्पष्ट स्वप्नों का आवाहन करता है,

ओऽम् एक कृपालु मानव-मुख बन जाता है।
ओऽम् सब कुछ है और ओऽम् शून्य है।
ओऽम् के आशीर्वाद बरसते हैं।

हरिः ॐ तत्सत्

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१९. शास्त्रों में जितने भी अनुष्ठान बताए गए हैं, उनमें से सबसे प्रभावशाली है, मानसपूजा।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२०. ध्यान वह शक्ति है जो मन को उसके अपने स्रोत की ओर आकर्षित करती है और मन एवं शरीर को अपने तेज से भर देती है। केवल ध्यान के माध्यम से व्यक्ति शाश्वतता को स्पर्श करता है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२१. श्रीगुरु अन्दर भी हैं और बाहर भी। श्रीगुरु समीप भी हैं और दूर भी। तुम किसी भी स्थान में, किसी भी समय, गुरुशक्ति की, गुरुतत्त्व की अनुभूति कर सकते हो। तुम अतीत में वर्षों पूर्व इसका अनुभव कर सकते हो। तुम भविष्य में अनेक वर्ष पश्चात् इसका अनुभव कर सकते हो। और तुम अभी, इस वर्तमान क्षण में गुरुशक्ति की अनुभूति कर सकते हो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२२. "मैं महान हूँ," जब तुम इसका अनुभव करते हो तो तुम अपने अन्दर महान सद्गुणों की उपस्थिति का आवाहन कर रहे होते हो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२३. यही कामना करो कि तुम्हें भगवान के दर्शन हों। सदैव। तुम जो भी कर रहे हो, जहाँ भी जा रहे हो, जिससे भी बात कर रहे हो, अपनी गहनतम इच्छा यही रखो, “हे ईश्वर, आप इस व्यक्ति में स्वयं को प्रकट करें, इस वस्तु में, मेरे धर्म में, इस कार्य में, आप स्वयं को प्रकट करें। मैं जो भी जानूँ, जो भी पाऊँ, आप वहाँ रहें।”

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२४. जब तुम सम्पूर्ण हृदय से पूजा करते हो तो इससे अद्भुत भक्ति जगती है। पूजा वह द्वार है जिसमें से भगवान अपने भक्तों के लिए अपना प्रेम उँडेल सकते हैं।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२५. एक सादा-सा गुड़हल का फूल जीवन का उत्सव मनाता है
जब वह उस प्रेम को अपने श्वास में समा लेता है
जो ब्रह्माण्ड की शक्ति ने, उसके रचयिता ने उसमें भर दिया है।
हर जीव इस प्रेम के, जीवन के
और दिव्यता के योग्य है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२६. सिद्धयोग, कृपा का, श्रीगुरु की प्रचुर कृपा का योग है। यह कृपा मुक्त रूप से, सहज ही साधकों के जीवन में प्रवेश करती है। तथापि, गुरुकृपा अपनी पूर्णता में उन्मीलित हो सके, इसके लिए वह यह माँग करती है कि साधक अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए समुचित और सच्चा प्रयत्न करें।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२७. यदि तुम प्रकृति को बारीकी से देखो तो तुम पाओगे कि प्रकृति सतत अन्तर्मुखी होती रहती है। चाहे वह समुद्र हो या वृक्ष, पशु हों या फूल; मिट्टी हो या पवन, अग्नि की लपटें हों या आकाश, प्रकृति सतत स्वयं अपने आपमें लौटने की प्रक्रिया में रहती है। हालाँकि प्रकृति बाहर की ओर विस्तृत होती दिखाई देती है, पर सत्य यह है कि प्रकृति सतत अन्तर्मुखी होने की प्रक्रिया में भी लगी रहती है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२८. केवल एक ही प्रकाश है, तुम्हारे अपने हृदय का महान प्रकाश। इस बोध के साथ ध्यान करो : "मैं प्रकाश हूँ। प्रकाश मैं है। मैं प्रकाश हूँ। मैं हूँ।"

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२९. विस्मय, आश्चर्य, चमत्कार . . . विस्मय का अनवरत भाव मन और हृदय को सजग रखता है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

३०. जब तुम मन्त्र-जप करते हो तो यह तुम्हें तब बल देता है जब तुम्हें बल की आवश्यकता होती है और जब तुम्हें मधुरता की आवश्यकता होती है, तब यह तुम्हें मधुरता देता है। जो कुछ भी श्रेष्ठ है और कल्याणकारी है, यह उसका भण्डार है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

३१. धन्य हैं वे लोग जिन्हें कृतज्ञता-भाव में गहरा आश्वासन मिलता है। धन्य हैं वे लोग जो उन सभी वस्तुओं का ध्यान रखते हैं जिनके लिए उन्हें कृतज्ञ होना चाहिए और इस प्रकार वे कृतज्ञता को एक आध्यात्मिक अभ्यास बना लेते हैं। धन्य हैं वे लोग जिनके पास यह सुनहरा अवसर है कि वे अपने जीवन में कृपा की उपस्थिति के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सकें।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

३२. हृदय में प्रवेश करना, सूर्य के केन्द्र में आने के समान है। तुम रहते ही नहीं; उस प्रकाश की सतरंगी शक्ति के अतिरिक्त कुछ और होता ही नहीं। जब तुम सूर्य के केन्द्र में होते हो तो उसके प्रकाश को किसी भी तरह अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। वह तुमसे होकर और तुम्हारे चारों ओर प्रवाहित होता है। अतः अपने हृदय में प्रवेश करने से, तुम सारे संसार को एक बेहतर स्वर्ग बना देते हो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

३३. जो मुझे मेरे वास्तविक रूप में जानते हैं, वे यह जानते हैं कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हारे प्रति मेरा जो प्रेम है, यदि तुम केवल उसमें अपनी आस्था रख सको तो तुम सब कुछ पा लोगे।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
[स्वामी] चिद्विलासानन्द, गुरुमाई और सिद्धयोग
एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन® के पंजीकृत व्यापार चिह्न हैं।